हिंदी विश्वविद्यालय में संस्कृत सप्ताह का समापन

मनुष्य को दिव्य बनाती है संस्कृत – कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, 23 अगस्त 2019: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में संस्कृत सप्ताह का समापन कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में गुरुवार 22 अगस्त को गालिब सभागार में किया गया। इस अवसर पर कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेडी, भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री मुकुल कानिटकर, कार्यकारी कुलसचिव प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर मंचासीन थे। दीप प्रज्ज्वलन, मंगलाचरण और

अतिथियों के स्वागत के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग के प्रभारी लेखराम दन्नाना ने किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। स्वागत वक्तव्य प्रो. प्रीति सागर ने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. शुक्ल ने कहा कि मनुष्य को दिव्य बनाने का नाम संस्कृत है। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसके शब्द को किसी भी क्रम में रखने से वाक्य का अर्थ नहीं बदलत उन्होंने कहा कि विश्व कोई ऐसीदुसरी भाषा नहीं है जिसके पदों का क्रम बदलने पर अर्थ न बदलता हों। उन्होंने इसे आनंद और सुख प्रदान करने वाली भाषा भी कहा। कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक के कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेडी ने कहा कि संस्कृत व्यक्ति की प्रेरणा स्त्रोत

है। देश के साथ-साथ विदेशों में संस्कृति का विस्तार बढ़ रहा है और विदेशों में शिक्षकों की अधिक मांग हो रही है। उन्होंने यम-नियम का उल्लेख करते हुए कहा कि महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के सूत्र इसी से लिए हैं। इसी सिद्धी ने गांधी को 150 वर्ष जीवित रखा है। उन्होंने कहा कि दोनों विश्वविद्यालय

भाषा के प्रति समर्पित है और इससे संस्कृत और हिंदी के संबंध और मजबूत होंगे।प्रो. वरखेड़ी ने दोनों विश्वविद्यालय के सम्बध को जोड़ते हुए कहा कि नागपुर देश के केंद्र में स्थित है और कवि कालीदास संस्कृत विश्वविद्यालय इसके ईशान कोण पर स्थित है जो देव स्थान है तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा नागपुर के नैऋत्य कोण पर स्थित है जो मेजमान स्थान पर स्थित है और दोनों में स्वाभाविक सम्बध है। भारतीय शिक्षण मंडल के संगठन मंत्री मुकुल कानिटकर ने कहा कि संस्कृत वाणी की साधना है और वह सभी भाषाओं का गंतव्य भी है। वाणी को शुद्ध करने का शास्त्र भी है संस्कृत। इस अवसर पर संस्कृत सप्ताह के अंतर्गत 15 अगस्त से आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण मंचासीन अतिथियों के हाथों किया गया।